Chap-7

श्री गणेशाय नमः

सप्तम् अध्याय

उपसंहार

लोकगीतों से संबंधित मेरे इस रोचक शोधकार्य के अंतिम चरण उपसंहार में मैं कहना चाहूँगी कि मेरा छोटा सा यह प्रयत्न मेरी परम ज्ञान पिपासा को तृप्त करने वाला सिद्ध हुआ। समग्रतया लोकगीत रुपी उदधि की अतल गहराई में गोता लगाकर मुझे ज्ञान रुपी जिस रत्न की प्राप्ती हुई है वह अमूल्य है, अतुलनीय है। लोक साहित्य एवं लोकगीत हमारी जमीं से जुडे समाज का एक अभिन्न हिस्सा है। ये लोकगीत, चाहे वह राजस्थान के हों या गुजरात के जनता के सहज स्वाभाविक उद्‌गार है। यह हमारे समाज का दर्पण है, जो हमारी सामाजिक व्यवस्था को भली भाँति प्रतिबिंबित करते हैं। मैंने पाया कि राजस्थान और गुजरात भौगोलिक दृष्टि से भले हो भिन्न हो परंतु उसके साहित्य में भावनात्मक, वैचारिक एवं सामाजिक रुप से ऐक्य है। जनमानस दोनों जगह समान रुप से एक सा है।

मैंने पाया कि राजस्थान और गुजरात दोनों ही क्षेत्रों का लोकसाहित्य अत्यंत समृद्ध व व्यापक है। लोक साहित्य की सभी विद्याएँ संपुष्ट रुप में प्राप्त होती है। लोकसाहित्य लोक की ही भाँति विशाल एवं वैविध्यपूर्ण है। जिस प्रकार राजस्थान के लोकगीत संपूर्ण राजस्थान का प्रतिनिधित्व करते हैं उसी प्रकार गुजरात के लोकगीत विषय वैविध्य के मामले में सबसे आगे हैं तथा संपूर्ण गुजरात की सांस्कृतिक अस्मिता का वहन करते हैं।

प्रारंभिक अध्याय का अध्ययन करने के पश्चात् मैंने पाया कि मनुष्य संस्कृति का निर्माता है और उसका सजग संवाहक भी। संस्कृति जीवन का पर्याय ही नहीं वह तो जीवन की कुँजी है अर्थात् संस्कृति अपने आप में बहुत व्यापक और गंभीर अर्थ बोधक है। संस्कृति अंतःकरण की शुचिता से प्रारंभ होती है। अंतःकरण की शुचिता से बाहरी आचरण की शुचिता स्वतः ही आ जाती है।

मैंने पाया कि लोकसंस्कृति को अभिव्यक्त करने वाले तत्व जीवन साहित्य और कला परंपरा। में निहित होते हैं चाहे वह राजस्थान के हो या गुजरात के। जैसे राजस्थान की संस्कृति उच्च, महान एवं विशिष्ट है उसी तरह गुजरात जो कि संतो की पावन भूमि है, अपनी प्राचीन संस्कृति की भव्य विरासत संपन्न मानव निवास की धरती है। अध्ययनोपरांत यह फलित होता है कि जैसे राजस्थानी संस्कृति का परिचय हमें उसके मेले, उत्सवों और रंगीन त्यौहारों से मिलता है उसी प्रकार गुजरात के विविध पर्व, विविध मेले उसकी संस्कृति को जीवंत रखने वाले तत्व हैं।

लोकगीतों के अध्ययन के पश्चात् मैंने जाना कि ये लोकगीत चाहे राजस्थानी हों या गुजराती लोक

द्वारा लोक के लिए बनी हुई प्राकृतिक कविता है, जिसमें लोक हृदय का निश्छल अभिव्यंजन हुआ है। मानवजीवन का कोई ऐसा पक्ष नहीं, कोई ऐसा विषय नहीं जिस पर लोकगीतों की मधुर, स्वर्गिक रोशनी न पड़ी हो। समाज में घटित होने वाली सारी घटनाओं का सफल साद्रश्य निरुपण इन लोकगीतों में हुआ है। समाज चाहे राजस्थान का हो या गुजरात का स्थितियाँ व आलेखन बखूबी लोककंठ से प्रवाहित होता है। मैंने पाया कि मानव का शैशव लोरी के बहाने यहीं सोता है, यौवन इन्हीं के माध्यम से प्रमोन्माद में प्रमत्त रहता है और वार्धक्य जीवन यात्रा से श्रान्त हो इन्हीं गीतों से मन बहलाया करता है।

मैंने जाना कि इन्हीं लोकगीतों के अगाध समुद्र में नारी अस्मिता रुपी रत्न भी छिपा पड़ा है। इन्हीं गीतो ने नारी जीवन के विविध पहलुओं को उजागर किया गया है तथा समाज में उसके स्थान पर भी प्रकाश पडता है। ये लोकगीत नारी कंठ से ही अभिव्यक्त हुए हैं और इन्होंने ही इसे हमारे समाज में जीवंत बनाए रखा है। नारी समाज का महत्वपूर्ण अंग है जिस सत्य को नकारा नहीं जा सकता। मैंने पाया कि ये लोकगीत नारी जीवन का दर्पण है। राजस्थान की ही तरह गुजरात के लोकगीतों में भी नारी सर्वत्र छाई हुई है। इन लोकगीतों ने नारी दर्द को अभिव्यक्त किया है। इस प्रकार ये लोकगीत नारी की सामाजिक दशा की भावाभिव्यक्ति है।

जब इन लोकगीतों का मैंने भाषाकीय द्रष्टि से अध्ययन करने का प्रयास किया तब मैंने पाया कि दोनों ही के अंतर्गत भाषिक सौंदर्य खिल उठा है। राजस्थान के पद्य साहित्य के अंतर्गत मुक्तक के दो रुप मिलते है वर्णन मुक्तक और स्फुट मुक्तक। वर्णन मुक्तक के अंतर्गत फाग, बारहमासा, चौमासा, गीत, गजल आदि रचनाएं प्राप्त होती है। स्फुट में दोहा, सोरठा, कुंडलिया आदि के संग्रह राजस्थान में मिलते है। मुडिया लिपि का प्रचलन मिलता है। जिस प्रकार राजस्थानी भाषा का शब्दभंडार विशाल, समृद्धशाली और वैविध्यपूर्ण है उसी प्रकार मैंने पाया कि गुजरात के लोकगीतों में भी भाषिक सौंदर्य निखरकर आया है। इनका वर्णन अत्यंत सरल है। प्राचीन सृजन दोनो के बावजूद नित्य नवीन सौंदर्य प्रकट करता है।

लोकगीत, लोकसंगीत और लोकवाद्य आपसी पूरक हैं और परस्पर एक दूजे से जुड़े हुए है। अपने लोकगीतों से संबद्ध इस शोधकार्य के दौरान मैंने जाना कि लोकसंगीत का प्रभाव लोकगीत से ही पड़ता है। और लोकगीत बिना संगीत और वाद्य के अधूरा, अपूर्ण है। इन लोकवाद्यों के उपयोग ने लोकगीतों में चार चाँद लगा दिए है। इन का गहन अध्ययन करने के पश्चात् मुझे पता चला कि राजस्थान और गुजरात दोनों ही लोकवाद्यों के संबंध में कितने धनी व निपुण है। प्रत्येक लोकवाद्य का एक अपना ही निजी महत्व एवं सौंदर्य है। लोकसंस्कृति इन्हीं लोकवादयों के माध्यम से जीवंत है और इसे जीवंत बनाए रखने के लिए युवापीढ़ी से मेरा यह नम्र निवेदन है कि इन लोकवाद्यों को बजाने में सिद्धहस्तता प्राप्त करने का प्रयत्न करें, तभी हमारी लोकसंस्कृति और लोकवैभव आनेवाली पीढ़ीयों के समक्ष अपने आपको को मूलरुप में स्थापित कर पाएगी व सजीव रह पाएगी।

अंततः यही निष्कर्ष रुप से कहूँगी कि ये लोकगीत मानव हृदय के हर्ष, उल्लास, सुख दुःख इत्यादि की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। ये हमारी सामाजिक व्यवस्था की अभिव्यक्ति है। हमारे समाज का दर्पण है। आज भी राजस्थान और गुजरात के घरों में इन्हीं लोकगीतों का आधिपत्य है और कंठोपकंठ प्रवाहित होते ये हमारे युवा जनमानस को तरबत्र करते, लोकवैभव और लोकसंस्कृति की अस्मिता का बरकरार रखे हुए हैं। इसी दिशामें बडौदा की सूरवाणी संस्था के राघवजी भाई रैयाणी और भरतभाई सी. शुक्ल का अमूल्य योगदान है, जो तत्कालीन समाज में लोकसाहित्य को जीवंत बनाए रखने का भरसक प्रयत्न करते हुए आज भी विविध कार्यक्रम आयोजित करते हैं। और हमारी युवापीढ़ी के समक्ष लोकसंस्कृति एवं लोकवैभव का यथावत् चितार प्रस्तुत करने का अभूतपूर्व प्रयास करते हैं। मैं उन सभी महान लोक कलाकारों की हृदय से कृतज्ञ हूँ जो हमारे समाज में हमारे इस महान लोकवैभव और लोकसंस्कृति को जीवंत बनाए हुए हैं।

अस्तु।

संदर्भ सूचि

	पुस्तक का नाम	लेखक
1.	संस्कृति के चार अध्याय	रामधारीसिंह 'दिनकर'
2.	लोक संस्कृति	वसन्त निरगुणे
3.	हिन्दी प्रदेश के लोकगीत (राजस्थानी)	डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय
4.	राजस्थानी भाषा : साहित्य संस्कृति	डॉ. कल्याणसिंह शेखावत
5.	लोकसाहित्य अने संस्कृति पुस्तक पहेलुं	जयमल्ल परमार
6.	गुजरात का मध्यकालीन काव्य	भगवतशरण अग्रवाल
7.	हिंदी प्रदेश को लोक (ग्राम) गीत	
8.	राजस्थानी साहित्य का इतिहास	डॉ. पुरुषोत्तम मेनारिया
9.	गुजराती साहित्यनी विकासरेखा	धीरुभाई ठाकर
10.	गुजराती भाषानुं अध्यापन	रणजितभाई एन. देसाई, मगनलाल के नायक, बकुलबाई जे. रावल
11.	गुजरातनी लोकविद्या	हसु याज्ञिक
12.	आपणी लोक संस्कृति	जयमल्ल परमार
13.	लोकसाहित्य विमर्श	जयमल्ल परमार
14.	गुजरातना सांस्कृतिक प्रवाहो	हरकांत शुकल
15.	राजस्थानी साहित्य का इतिहास	डॉ. मोतीलाल मेनारिया
16.	लोकसाहित्य की भूमिका	डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय
17.	राजस्थानी लोकगीत	डॉ. सूर्यकरण पारीक
18.	राजस्थानी लोक साहित्य का सैद्धांतिक विवेचन	डॉ. सोहनदान चारण
19.	राजस्थानी भारतीय लोकगीत	डॉ. नंदलाल कल्ला, डॉ. सुरेश गौतम
20.	राजस्थानी लोकगीत भाग-1	गंगाप्रसाद कमठान
21.	राजस्थानी लोकगीत भाग-2	शिवसिंह चोयल
22.	मारवाडी गीत संग्रह	विश्वनाथ बुधिया
23.	श्री मोहनलालजी व्यास शास्त्री की डायरी से	गंगाप्रसाद कमठान
24.	राजस्थानी लोकगीत भाग-4	मोहनलाल व्यास शास्त्री, सांवलदान आशिया
25.	राजस्थानी लोकगीत भाग-3 (विरह, प्रकृति और भक्ति)	हनुमंतसिंह देवड़ा
26.	राजस्थानी लोकगीत	डॉ. स्वर्णलता अग्रवाल
27.	लोकसाहित्य : तत्वदर्शन अने मूल्यांकन	श्री जयमल्ल परमार, बळवंत जानी
28.	आपणां लोकगीतो	उजमशी परमार
29.	गुजराती लोकगीत	डॉ. कृष्णा गोस्वामी
30.	गुजरातनां लोकगीतो	खोड़ीदास भा. परमार
31.	गुजरातनां लोकगीतो (भवाईनां गीतो)	खोड़ीदास भा. परमार
32.	कवि शामळ भट्ट कृत 'सिंहासन बत्तीसी'	22वीं कथा (सुभगा पुतली)
33.	मेंदी लाल गुलाल	डॉ. अमृत पटेल

	पुस्तक का नाम	लेखक
34.	श्री शिवपुराण (अध्याय 17वाँ)	शामळ भट्ट
35.	सौरभ रास - लोकगीत संग्रह	डॉ. हसु याज्ञिक
36.	भवाई वेशोनी वार्ता	भरतराम भा. महेता
37.	खोडीयारमा - चामुंडा - रांदलमांनी गरबावली	श्री हरीशभाई वरन
38.	नवदुर्गा गरबावली	संकलन श्रीमती वर्षा शाह
39.	सौरभ लग्नगीत संचय	सं. डॉ. हसु याज्ञिक
40.	लोकसाहित्य माला	
41.	सुरत जिल्लानां लोकगीतो	सं. श्री चुनीलाल भट्ट
42.	रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति)	झवेरचंद मेघाणी
43.	गुजरातना लोकगीतो	मधुभाई पटेल
44.	गु. पाठ्यपुस्तक (बृहद् आवृत्ति)- कक्षा सातवीं	
45.	रासडानो रंग	खोड़ीदास भा. परमार
46.	कृष्णचरित्रनां लोकगीतो	कु. श्रद्धादेवी मजुमदार
47.	मेघाणी ग्रंथ	उमाशंकर जोशी
48.	कंकावटी (मंडळ बीजुं)	झवेरचंद मेघाणी
49.	रमझट गरबावली	श्रीमती हर्षा शाह
50.	स्त्रीशक्ति - अंक	
51.	विठ्ठल स्मरणिका अने गिरनार वर्णन	डॉ. मा. हरेश्वरी देवी
52.	लोक साहित्य माळा : मणको 1	डॉ. पुष्कर चंदरवाकर
53.	भाल प्रदेशना लोकगीतो	सं. श्री जोरावरसिंह जादव
54.	बनासकांठाना लोकगीतो	वसंत जोधाणी
55.	नरसिंह महेता	अमृतलाल भ. याज्ञिक
56.	मीरांबाई	सुरेश दलाल
57.	सोरठी संतवाणी	सं. झवेरचंद मेघाणी
58.	लोकगीतो का विकासात्मक अध्ययन	डॉ. कुलदीप
59.	लोकगीत तत्व अने तंत्र	सं. बळवंत जी
60.	लोकगुर्जरी वार्षिक अंक पांचमो, 1965	
61.	लोकगुर्जरी : वार्षिक अंक सातमो, 1974	
62.	गुजराती साहित्यनो इतिहास	ले. रतिलाल सां. नायक सोमाभाई वी. पटेल दमयंती र. शुकल